आज का पुरुषार्थ, 21 May 2022

From: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज से हम वरदानी मूर्त बनने की ओर आगे बढ़े "*

हमें बाबा से अनेक वरदान मिले है। इस समय **परम सदगुरू** हम पर राज़ी हुआ है। और राज़ी होकर वह रोज ही हमें नये नये वरदान देते है।

उनके वरदानों को स्वीकार कर लेना, उन **वरदानों को स्मृति में रखना**, स्वयं को उन वरदानों दिनों के **स्वरुप** बनाना इसकी बहुत आवश्यकता है। और इसके लिए सदज्ञान भी चाहिए।

वरदान बहुत शक्तिशाली है। वरदानों में शक्ति है आग को भी पानी में बदलने की। अर्थात आग जैसी विकट परिस्थिति हो, उसे पानी जैसी शीतल परिस्थिति में बदल सकती है वरदान।

वरदानों को धारण करने की क्षमता उसी बुद्धि में आती है, जो लम्बा काल ईश्वरीय नशें में रहते है। क्योंकि ईश्वरीय नशें से बुद्धि कैपेवेल बनती है।

उसकी सामर्थ्य बढ़ती है, उसमें **योग्यता** आती है। और यह **वरदान हमारी बुद्धि में धारण हो जाते है।**

तो पात्र बहुत शक्तिशाली होना चाहिए। साथ-साथ बहुत स्वच्छ होना चाहिए। वरदान जैसी स्वच्छ चीज़ जिस पात्र में भरनी है वह गंदगी से भरपूर नहीं होना चाहिए। नहीं तो वह अंदर की गंदगी इन वरदानों को बाहर फेंक देती है।

जिन्होंने अपनी बुद्धि को **स्वच्छ** रखा है, जिन्होंने **पवित्रता** से अपनी बुद्धि का श्रृंगार किया है, जिन्होंने लम्बे काल ईश्वरीय नशें का अभ्यास किया है उनके बुद्धि योग्य बन गई है वरदानों को धारण करने के लिए।

उन्होंने वरदान धारण कर लिये है और यह वरदान अब आने वाले समय में इस संसार के लिए महान कार्य करेंगे। वह इस वरदान के स्मृतिस्वरुप होंगे।

" मैं विघ्नविनाशक हूँ .. यह बाबा का वरदान मुझे प्राप्त है "

और इस वरदान से अनेकों को दृष्टि देंगे। और एकसाथ अनेक आत्मायें विघ्नों से मुक्त हो जायेंगी। इस सारे संसार की विघ्नों को नष्ट करने करनेवाले बन जायेंगे वह।

बाबा ने वरदान दिया है ... " **सदा सुखी भव** "

जिन्होंने इस वरदान को स्वीकार कर लिया वह आनेवाले समय में एकसाथ दृष्टि देकर अनेकों को सुखी बनाने लगेंगे।

बाबा का वरदान है .... *" बच्चे, पवित्र भव .. श्रेष्ठ योगी भव .. सफलता मूर्त भव .. स्थिर बुद्धि भव "*

इन वरदानों को स्वीकार करे। इस नशे में आ जाये कि मुझे बाबा से मिल गया है। सारा दिन इस **स्मृति** में रहे तो हम उसके स्वरुप बन जायेंगे।

जितना जितना स्मृति और नशा रहेगा, कि मुझे वरदाता से यह वरदान मिल गया है उतना ही उस **वरदान** का हम स्वरुप बनेंगे। और फिर दिन में दो-चार बार उसे यूज़ करे।

मानों कोई विघ्नों से भरी कोई आत्मा सामने आई, उसने बताया कि यह यह विघ्न मुझे है। तो ....

" अपने इन वरदानों को स्मृति में लाये .. बाबा का हाथ अपने सिर पर फ़ील करे .. और संकल्प करे इसका यह विघ्न समाप्त हो जाये "

रिजल्ट बहुत ही सुन्दर होगा। तो आज सारा दिन अभ्यास करेंगे, **स्वमान में रहेंगे** ...

" मैं वरदानी आत्मा हूँ .. मास्टर वरदाता हूँ .. बाबा सूक्ष्म लोक में .. उनका वरदानी हाथ मेरे सिर पर है .. बाबा दृष्टि दे रहे है .. और उनकी दृष्टि से मुझमें वरदान समाते जा रहे है "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org